Gyanvividha, Vol.-1; Issue-5 (October-December) 2024 : PP-110-113

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-1; Issue-5 (Oct.-Dec.) 2024
Page No.- 110-113
©2024 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ. चन्द्र भूषण
एम.ए., पीएच.डी.,
(इतिहास विभाग), बी.आर.ए.
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

Corresponding Author :
डॉ. चन्द्र भूषण
एम.ए., पीएच.डी.,
(इतिहास विभाग), बी.आर.ए.
बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सामाजिक जीवन में बुनियादी शिक्षा : एक अध्ययन

भारत का इतिहास अतीत काल से ही गौरवशाली रहा है। प्राचीनकाल से ही यह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक चेतना का केन्द्र रहा है। वाल्मीकि का तपोधाम, गौतम बुद्ध और महावीर की जन्मस्थली रही इस भूमि ने सर्वदा विश्व को एक नया प्रकाश दिया है। यह अलग बात है कि हम अपने कुछ संकीर्ण विचारों के कारण गुलामी की खाई में जा गिरे और अंग्रेजों ने अपने शासन–तंत्र को मजबूत बनाने के लिए अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया। मैकाले के शब्दों में, ''हमें ऐसे व्यक्ति उत्पन्न करने हैं, जो शरीर से भारतीय हो, रहन–सहन, वेश–भूषा, विचार आदि में अंग्रेजी हो, तभी हम भारत पर शासन कर सकते हैं।'' ऐसे ही समय में भारतीय नवनिर्माण के सपनों ने करवट लिया और बुनियादी शिक्षा की नींव पड़ी। 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हम एक महत्मा को पाते हैं, जिन्होंने न केवल विदेशी शासन से देश को मुक्त कराया, बल्कि पहली बार बुनियादी शिक्षा और इसके महत्व को दृष्टिगोचर किया। महात्मा गांधी के अनुसार– ''समाज के पुनर्निर्माण के लिए नागरिकों को शिक्षित बनाना पहली शर्त होगी, शिक्षा से सम्मान तथा समृद्धि को प्रधानता मिलेगी, साथ ही व्यक्ति की स्वतंत्रता भी अक्षुण्ण बनी रहेगी।'' महात्मा गांधी ने पाया कि देश के कोने–कोने में पसरी पीड़ा को दूर करने का एक मात्र विकल्प है। 'शिक्षा'।

तत्कालीन प्रचलित शिक्षा–पद्धति में केवल तमाशा मात्र था। इस शिक्षा से गांव की आवश्यकताएँ पूरी नहीं होतीं। गांधीजी चाहते थे कि एक ऐसी शिक्षा का विकास हो, जिससे बच्चों के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक एवं नैतिक विकास हो। न कि बच्चे

इतिहास विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

किताबी कीड़ा बने। करीब 30 वर्ष के चिंतन के बाद गांधीजी ने दस्तकारी के माध्यम से 'बुनियादी शिक्षा' की पद्धति निकली। 63 वर्ष की अवस्था में, कारावास के समय उन्होंने जिस शिक्षा प्रणाली की महात्मा गांधी की बुनियादी शिक्षा

परिकल्पना की थी, वही बाद में नई तालीम या बुनियादी शिक्षा पंडित के नाम से प्रचलित हुई। बुनियादी शिक्षा के माध्यम से महात्मा गांधी का मतलब 0–7 वर्ष, 7–14 वर्ष, महाविद्यालयों और प्रौढ़ शिक्षा है। गांधीजी के शब्दों में – ''शिशु की शिक्षा माँ के गर्भ से आरम्भ होती है। वह जीवन के लिए तालीम है, हमारा क्षेत्र 7 से 14 वर्ष के

बच्चे नहीं हैं, माँ के पेट में आने से लेकर मरते हैं, वहाँ तक हमारा कोई तालीम का क्षेत्र है।''

गांधीजी ने बेतिया राज के मैनेजर श्री विट्टी एवं सरकारी अधिकारियों से अपने रचनात्मक कार्यों में सहयोग की अपील की ताकि सबके सहयोग से एक नई चीज फिजा बन सके। मोतिहारी से 20 मील दूर पूर्व बड़हरवा–लखनसेन में 14 नवम्बर 1917 ई० को इन्होंने पहला स्कूल खोला। स्थानीय बाबू शिवगुण मल ने स्कूल के लिए अपना घर दे दिया। श्री बबन गोखले, जो एक इंजीनियर थे, को स्कूल की व्यवस्था सौंपी गयी, उनकी पत्नी अवन्तिका बाई गोखले और गांधीजी के सबसे छोटे लड़के देवदास गांधी के जिम्मे पठन–पाठन की जिम्मेदारी रही। 20 नवम्बर 1917 ई० को बेतिया से 40 मील उत्तर–पूर्व स्थित भितहरवा में बुनियादी शिक्षा का विद्यालय (आश्रम) राम जानकी मंदिर के साधु द्वारा दी गयी जमीन पर खोला गया। उस स्कूल की जिम्मेदारी सर्वश्री एस.एल. सोमन, बाई० प्रोहित और कस्तूरबा गांधी को सौंपी गयी। तीसरे बुनियादी विद्यालय की स्थापना 17 जनवरी 1918 ई० को मधुबन (वर्तमान पूर्वी चम्पारण) में की गयी। फिर स्कूलों के खोले जाने का सिलसिला शुरू हो गया और स्थिति बदली। बुनियादी विद्यालयों की शैक्षणिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के बाद के दिनों में वृन्दावन (वर्तमान पश्चिमी चम्पारण) को मुख्यालय बनाया गया। गांव में शिक्षा, सफाई एवं स्वास्थ्य के प्राथमिक जानकारी के कार्यों में स्वयंसेवी उत्साह से लग गये और देखते–देखते पूरे चम्पारण की स्थिति में व्यापक तब्दीली की फिजा बन गयी।

बुनियादी शिक्षा में शैक्षणिक विकास के लिए अक्षर ज्ञान दिया जाने लगा। आर्थिक विकास के लिए रोजगारपरक शिक्षा यथा– सूत काटना, टोकरी बुनना, दस्तकारी करना, मीठा बनाना आदि कुशलता के साथ सीखाया जाने लगा। गांधीजी आत्मनिर्भरता को शिक्षा का वास्तविक मापदंड समझते थे। आत्मनिर्भरता से उनका तात्पर्य यह था कि बेसिक स्कूल इस सीमा तक स्वावलम्बी हो जाए कि अध्यापकों के वेतन विद्यालयों के बच्चों द्वारा उत्पादित वस्तुओं को बेचकर दिया जा सके। गांधीजी के अनुसार ''शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, बच्चे आत्मनिर्भर बन सके तथा बेरोजगारी से मुक्त हो। हमारे जैसे गरीब देश में हाथ की तालीम जारी करने से दो हेतु सिद्ध होंगे। एक तो हमारे बालकों की शिक्षा का खर्च निकल आयेगा और दूसरा वे एक ऐसा धंधा सीख लेंगे, जिसका अगर वे चाहें तो उत्तर–जीवन में अपनी जीविका के लिए सहारा के लिए उपयोग कर सकते हैं। इस पद्धति से हमारे बालक आत्मनिर्भर अवश्य हो जायेंगे। गांधीजी ने अक्टूबर 1937 ई० में वर्धा के शिक्षा–सम्मेलन में कहा था कि – ''सवाल होता है कि प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप क्या हो? मेरा जवाब यह है कि किसी उद्योग या दस्तकारी को बीच में रखकर उसके जरिये ही सारी शिक्षा दी जानी चाहिए। लड़कों को कुछ भी सीखाया जाए, आप कह सकते हैं कि मध्य–युग में हमारे यहाँ लड़कों को सिर्फ धंधा ही सिखाया जाता था। मैं जानता हूँ, लेकिन उन धंधों के जरिये सारी तालीम देने की बात लोगों के सामने थी। धंधा सिर्फ धंधा के ख्याल से सीखाया जाता था। हम तो धंधा या दस्तकारी की मदद से दिमाग को बेहतर बनाना चाहते हैं। मैं तो कहता हूँ, प्राथमिक शिक्षा के लिए कोई धंधा आता हो तो निःसंकोच सुझाइये, ताकि हम उस पर भी अमल कर सकें। लकड़ी मुझे सबसे ज्यादा इसलिए जंचती है कि छोड़कर अन्य धंधों के लिए हमारे पास कोई सामान मौजूद नहीं है। अपने लिए शिक्षा का यही तरीका उपयोगी होगा। बशर्त कि हम अपने बालकों को शहरी न बनाना चाहें। हम तो उन्हें अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता और अपने देश की सच्ची प्रतिभा का प्रतिनिधि बनाना चाहते हैं और मेरे ख्याल में स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षा के सिवा दूसरे ढंग से हम उन्हें ऐसा नहीं बना सकते। इस मामले में यूरोप हमारा आदर्श बन सकता है, क्योंकि वह हिंसा पर विश्वास करता है, हमारे पास शिक्षा के इस अहिंसात्मक योजना के सिवा और कोई उपाय ही कहाँ है?''

गांधीजी मानते थे – ''शिक्षा का आरंभ उद्योग द्वारा होना चाहिए। शिक्षा का मतलब केवल अक्षरी ज्ञान तक ही सीमित रहना नहीं है।'' शिक्षा के बारे में 'हरिजन' नामक एक लेख में लिखा है कि – ''मेरा मत है कि बुद्धि की सच्ची शिक्षा शारीरिक अंगों के उचित व्यायाम और अनुशासन से प्राप्त हो सकती है। शारीरिक

अंगों के बुद्धिपूर्ण उपयोग से बालक का बौद्धिक विकासक होता है।'' गांधीजी का मानना था कि – ''शिक्षा ऐसी होनी चाहिए कि व्यक्ति अपनी जीविका आसानी से चला सके, चाहे वह कितना भी गरीब क्यों न हो?'' उनकी प्राथमिक शिक्षा की नीति गरीब लोगों की भावना को ध्यान में रखकर बनायी गयी थी। गांधीजी ने कहा था ''पाठशाला चरित्र निर्माण एवं शिक्षा रोजगार का साधन होना चाहिए।''

गांधीजी विद्यार्थियों को खेलकूद में एक–दूसरे से होड़ करने के लिए खूब बढ़ावा देते थे, किन्तु पढ़ाई में दूसरों को हराने के लिए कभी किसी को उत्साहित नहीं करते थे। उनका नम्बर देने का तरीका भी विचित्र था। वह सबसे अच्छे लड़के के काम से अन्य लड़कों की तुलना भी नहीं करते थे। अगर विद्यार्थी ने अपनी पढ़ाई में तरक्की की तो उसे अधिक नम्बर देते थे। गांधीजी विद्यार्थियों पर पूरा विश्वास करते थे और परीक्षा के समय उनकी निगरानी के लिए वहाँ किसी को नियुक्त नहीं करते थे। आश्रमिक शिक्षा का मूल उद्देश्य था बच्चों में स्वतंत्रता की भावना को जागृत करना। गांधीजी भारत के हर गाँव में बुनियादी विद्यालय खोलना चाहते थे। किन्तु उन्होंने इस बात को समझ लिया था कि अगर शिक्षक स्वावलम्बी नहीं होंगे तो इस गरीब मुल्क के गांव–गांव में विद्यालय खोलना सम्भव नहीं है। इसलिए बुनियादी विद्यालय के विद्यार्थियों को कोई दस्तकारी–साधारणतः कताई सिखनी पड़ती थी।

गांधीजी जरूर मानते थे कि समाज में समानता और सच्ची शांति स्थापित करने का काम बच्चों से शुरू करना चाहिए। वे कहते थे ''यदि विद्यार्थी पढ़–लिखकर हाथ से काम करना भूल जाएँ या हाथ से काम करने में शर्माएँ तो ऐसी शिक्षा से अनपढ़ रहकर पत्थर तोड़ना अच्छा है।'' गांधीजी अपने नाती को कपास की खेती कैसे की जाती है, तकली की चकती कैसे बनायी जाती है. सूत से कपड़ा कैसे बुना जाता है और तार गिनकर सूत कैसे अटेरा जाता है, यह बताते हुए उसे भूगोल, सामान्य विज्ञान, गणित, ज्यामिति, सभ्यता और इतिहास की बातें भी सिखाते थे। वे कहते थे – ''कताई के साथ–साथ चर्खे की बनावट, चक्के एवं नली को देखकर विद्यार्थियों को ज्यामितिक वर्ग, वृत्त, रेखाओं आदि का ज्ञान हो जाएगा और लकड़ी तथा कपास पैदावार की जानकारी साथ ही वे विभिन्न देशों की जलवायु से परिचित हो जायेंगे और उन्हें इस प्रकार भूगोल का भी ज्ञान हो जायेगा। इस प्रकार उसके मन में जानने की उत्सुकता और कोई नई चीज बनाने का आनन्द पैदा होगा।''

सामाजिक एवं नैतिक विकास के लिए एक ही विद्यालय में एक ही शिक्षक के नेतृत्व में जाति और धर्म की दूरियों को पाटकर शिक्षा दी जाने लगी। कुरीतियों और नशापान की आदतों को छोड़ने के लिए आम आदमी के आत्मबल को बढ़ाने का कार्य भी चलने लगा। इस पावन कार्य को मूर्तरूप देने के लिए डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य कृपलानी, कस्तूरबा गांधी, सर्वश्री एस. एल. सोमन, बी.बाई. पुरोहित आदि विभूतियों ने बापू द्वारा स्थापित बुनियादी विद्यालयों में बतौर शिक्षक चम्पारणवासियों को पढ़ाया। स्वतंत्रता के प्रारम्भिक वर्षो में बापू के कारण देश अंधकार की काल कोठरी से निकला। कहा भी गया है – ''आशा है कि प्रबुद्ध वर्ग आत्म चिंतन करेगा – हम कौन थे, क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ मिलकर विचारें ये समस्याएँ सभी।'' गांधीजी कहते हैं – ''उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पायी है, जिसके शरीर को ऐसी आदत डाली गयी है कि वह उसके बस में रहता है, जिसका शरीर चौन से और आसानी से सौंपा हुआ काम करता है। उस आदमी ने सच्ची शिक्षा पायी है, जिसकी बुद्धि शुद्ध, शांत और न्यायदर्शी है। उसने सच्ची शिक्षा पायी है, जिसका मन कुदरती कानूनों से भरा है और जिसकी इंद्रियाँ उसके बस में है, जिसके मन की भावनाएँ बिल्कुल शुद्ध है, जिसे नीच कामों से नफरत है और जो दूसरों को अपने जैसा मानता हैं ऐसा आदमी ही सच्चा, शिक्षित या तालीमशुदा माना जायेगा, क्योंकि वह कुदरत के मुताबिक चलता है। कुदरत उसका अच्छा उपयोगी करेगी और वह कुदरत का अच्छा उपयोग करेगा।'' गांधीजी कहते हैं ''इस तरह की शिक्षा तो पारंपरिक रूप से हिन्दुस्तान के लोगों को सदियों से प्राप्त होती रही है। केवल अंग्रेजी राज में ही इसके विपरीत मूल्यों वाली अनैतिक शिक्षा दी जा रही है।''

संक्षेप में गांधीजी की दृष्टि में शिक्षा का तात्पर्य केवल औपचारिक ज्ञान नहीं, बल्कि व्यवहारिक और

अनुभवजनित ज्ञान है, जो मानव को एक नयी दृष्टि और मौलिक चिंतन की विशेषता प्रदान करती है। गांधीजी की संकल्पना में शिक्षा वही है, जो बच्चों के अज्ञान के अंधकार को विनष्ट कर दे और उसकी जगह एक नयी ज्ञान – रोशनी और जिज्ञासा – पिपासा जागृत कर दे। बुनियादी शिक्षा को गांधीजी ने एक ऐसा महत्वपूर्ण साधन माना, जिससे बच्चे के व्यक्तित्व का सम्यक् और सर्वांगीण विकास हो सके।

संदर्भ सूची :

1. रश्मि कुमारी सिंह, गांधीजी के सर्वोदय की प्रासंगिकता, मतादर्श, (जनवरी 2012), पृ. 53–54.
2. चम्पारण में महात्मा गांधी, कन्सेप्ट कमिटी, राज भवन, पटना, पृ. 8.
3. शोभाकान्त झा, प्राथमिक शिक्षाः एक अध्ययन (पश्चिमी चम्पारण के संदर्भ में 1996), पृ. 1–2.
4. महात्मा गांधी, आत्मकथा, पृ. 255.
5. वीणा प्रसाद, महात्मा गांधी के आर्थिक चिंतन के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा, पृ. 55–57.
6. महात्मा गांधी, बुनियादी शिक्षा, दूसरा संस्करण, 1953.
7. महात्मा गांधी, नयी तालीम की ओर, तृतीय संस्करण, 1956.
8. योगेन्द्र नाथ मिश्र, बिहार में बुनियादी शिक्षा, भाग–3, 1957.

•